भजन

तर्ज–मिलती है जिंदगी में यह रातें कभी कभी

कैसी हुई है हांसी,फरामोशी में जो की है
बेशक इलम को लेकर रुह होश में नहीं है

1–पूरा पिया ने अपना,बेशक इलम दिया
जागे में भी तो शक न,बेशक हमें किया
बेशक इलम.....

2– न खेल हमने मांगा,न दिल हमारे उपज्या
खुद ही दिखाया हमको,जैसा पिया ने समझा
ये इश्क है पिया का,जो हम समझे नहीं

3– पिया ने हाल दिल का,रूहों के दिल दे दिया
रूहों के दिल को अपने,दिल में ही ले लिया है
फिर भी वोह दिल हमारे,क्यों रहनी में नहीं हैं

4–ऐसा दिखाया इलमें,हमें अर्श में बिठाया
अपने हुकम से खुद ही तेहेकीक है कराया
बैठी तले चरण के,क्यों जानते नहीं हैं

5– है खेल इश्क का ये,और इश्क में दिखाया है
इश्के भुलाया पहले,इश्क में जगाया है
बैठे हैं हक के आगे,क्यों बोलते नहीं है